Shubham Mankotia
Hindi Department
JU

* बाल- विनोद :-

माँ,
मैंने माखन नहीं खाया
उड़ाने को हँसी मेरी
सब सखा यह मिलकर
मेरे मुँह लगाया।
छींके पर रख बर्तन
देख तुमने खूब ऊँचा लटकाया.
कहता हूँ मैं
भला नन्हें हाथों से
कैसे उसे पाया?
लगा मुँह दही पोंछ
चतुराई करी
मक्खन भरा बर्तन
पीठ पीछे छुपाया।
फेंक छड़ी
मुस्कुराई यशोदा
कान्हा गले लगाया।
दिखा भक्ति का प्रताप माँ को
बाल- विनोद से
उसका मन मोह लिया
कहे सूरदास
ऐसा सुख मिला यशोदा को
जो ना शिव - ब्रह्मा ने पाया।

* मूल कविता:- मैया मैं नाहिं माखन खायो।

* झोंका :-

दुनियादारी से अलग
तन-मन से मरमाया हुआ
ताजी हवा का एक झोंका
आ खड़ा हुआ दहलीज़ पर
ना जाने कहाँ से ?
हुआ गीतशील
और
आखिर खुला सदियों बंद
जंग लगा
दरवाज़ा ।
मंद-मंद मुस्कुराए
देखता रहा टकटकी लगाए
ना लाँघी दहलीज़
मर्यादा ने
बिन बुलाए
अब समेटी
वो सदियों की चुप्पी
बिखेर सुगंध
हर तरफ
चल पड़ा
डाल ज़ंजीर
दरवाज़ा
फिर बंद
सदियों - सदियों तक ।

---

* मूल कविता :- फनाला

*नए रास्ते :-

होगा कोई राहगीर मतवाला
हुआ जो अलग कभी
भीड़ से
रह गया अकेला।
छोड़ रैन-बसेरा
निकला अलग होकर
मुख्य धारा से।
हटाए होगें काँटे
पैरों तले रौंदे होगें
कई घास कोमल-पौधे
लहू के घूँट कितने पिये होगें
और बनाया
निस्संदेह एक नया-नवीन रास्ता
कच्चा और सँकरा
परंतु बिल्कुल अनोखा
जो देता पता
नए लक्ष्य का।
चलते-चलते मिट गई जब घास सारी
हो जाता फिर वो एक आम रास्ता।
जो ना निकलती कभी भीड़
निरंतर उस पर
ना बन पाता फिर वो
एक आम रास्ता।

———o———

* मूल कविता :- नये रस्ते

* नींद :-

जिस नींद से
कभी लगाव था बहुत
आज उस नींद से
कोई सरोकार नहीं ।
अंधेरा सी हो गई है नींद
बावरी सी सारी रात
स्वयं फिरे
संग
चढ़ा कांधे चिंता के
मुझे भी घुमाए ।
कुछ नई
कुछ पुरानी
जा दहलीज़ खटखटाए
लगी कील उखाड़े
कर घायल हाथ
पीर महसूस
लौटी
बेसुध बोझिल आँखें

---

* मूल कविता :- नींदर

* सवार :-

कभी तुम्हे याद नहीं किया
क्योंकि तुम्हे कभी भूले ही नहीं
मेरी कविता
गज़ल
कहानी में
तुम
किसी ना किसी रूप में
आ ही जाते हो
मेरे सामने
अक्षरों में लिपटे हुए
अनेक अर्थों से झांकते
शरारत करते
दिख ही जाते हो।
मैं लिखूं या ना लिखूं
तुम सवार रहते हो हमेशा मेरी कहानी में
यह मैं नहीं
सब मानते हैं।

———o———

* मूल कविता :- सोआर